पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

राज्यपाल से मिले शायर मुनव्वर राना

सूचना विभाग की साहित्यिक उर्दू मासिक पत्रिका 'नया दौर' में राज्यपाल की पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' पर लिखे लेख की प्रति भेंट की

लखनऊ: 8 नवम्बर, 2017

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक से प्रख्यात शायर और लेखक श्री मुनव्वर राना ने राजभवन मंे मुलाकात कर उन्हें उनके संस्मरण संग्रह 'चरैवेति! चरैवेति!!' के लिए मुबारकबाद दी और कहा कि वह शायद पहले ऐसे सियासी व्यक्ति हैं जिन्होंने बेहद बेबाक होकर ईमानदारी से अपने बारे में लिखा है। पुस्तक पर श्री मुनव्वर राना ने एक लेख लिखा है जो सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की विख्यात साहित्यिक मासिक उर्दू पत्रिका 'नया दौर' के नवम्बर के अंक में प्रकाशित हुआ है। श्री राना ने 'नया दौर' के नवम्बर के अंक की प्रति भी राज्यपाल श्री राम नाईक को भेंट की।

श्री राना ने बताया कि बीमारी के दौरान उन्हें पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' का उर्दू संस्करण मिला, जिसे उन्होंने पढ़ना शुरु किया तो वह पढ़ते ही चले गए और इस दौरान कई बार उनकी आंखों से बेअख्तियार आंसू गिरते रहे। उन्होंने बताया कि श्री राम नाईक ने गरीबी में होश संभाला और अपने परिश्रम के बल पर 3 बार विधायक, 5 बार सांसद फिर केंद्रीय मंत्री और उत्तर प्रदेश के राज्यपाल बने। उन्होंने पुस्तक के अंश के हवाले से बताया कि अपने पिता जी के शव को मुंबई से अपने गृृह जनपद ले जाने का संस्मरण बहुत भावुक कर देने वाला है। उमा चाची ने जब उनसे बम्बई में कहा कि यहां चाय पीना सीख लो, यहां तुम्हें कोई दूध नहीं पूछेगा, जैसे जुम्ले उनके संस्मरण को समृद्ध बनाते हैं। श्री राना ने बताया कि उनका अपना बचपन भी श्री राम नाईक के बचपन की तरह ही कठिनाइयों और कशमकश में गुजरा है इसलिए उनकी किताब पढ़ते हुए बहुत बार आंखे भीग गई।

श्री राम नाईक ने श्री राना का गर्मजोशी से राजभवन में स्वागत किया और कहा कि वह भी श्री मुनव्वर राना का लेख पढ़कर भावुक हो गए। श्री नाईक ने कहा कि उनके लिए यह गर्व की बात है कि उनकी किताब को पढ़ आत्मविभोर होकर मुनव्वर राना जैसे देश के जाने माने विख्यात साहित्यकार और कवि ने लेख लिखा, वह उनके शुक्रगुजार हैं। उन्हांेने इस अवसर पर बताया कि उनके संस्मरण 'चरैवेति! चरैवेति!!' के उर्दू अनुवाद का दूसरा संस्करण भी जल्द ही आने वाला है।

अंजुम/ललित/राजभवन (419/6)